भदैनी के जैन मंदिर- तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की तीर्थ स्थली

दिगम्बर जैन मंदिर सन् 1855 ई. में श्री गणेशीलाल के सुपुत्र श्री प्रभुदास द्वारा बनवाया गया। वेदी के बाहर आलों में मातंग यक्ष और काली (मानवी) यक्षी विराजमान हैं। यक्षी काली के निरूपण में दिगम्बर परम्परा का पालन किया गया है। इस मंदिर के दाईं तरफ तलघर में एक चरण चिन्ह, एक चौमुखी मूर्ति, देवी पद्मावती एवं क्षेत्रपाल विराजे हैं। पद्मावती देवी का निरूपण परिपाटी से भिन्न होते हुए भी भाव-भंगिमा सुन्दर है।

इस मंदिर के तलघर में ज्येष्ठ सुदी 5, सन् 1905 ई. में पूज्य गणेशप्रसाद वर्णी के सत्प्रयासों से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना से पूर्व सेठ माणिक चन्द्र, बम्बई वालों के कर-कमलों से स्याद्वाद महाविद्यालय स्थापित किया गया, जिसमें लगभग 15,000 पुस्तकों का संग्रह है। यहाँ के विद्यार्थियों ने जैन विद्या के प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाई हैं।

दूसरा दिगम्बर जैन मंदिर- यह मंदिर बाबा छेदीलाल का मंदिर है, जिसकी प्रतिष्ठा उन्होंने सन् 1895 ई. में कराई। यहाँ चरण चिन्ह, जो 1895 ई. पूर्व विराजित थे, उन पर इस प्रकार लेख है- 'वेरवे भद्रेन्दुसित मार्गशेष भराख्वे 2080 काश्यां वाराणसी सुपार्श्व सुजन्मे तीर्थे'। अगर 2080 वीर निर्वाण सम्वत् माना जाये तो यह मंदिर इन तीनों मंदिरों में सबसे पुराना सन् 1553 ई. का ज्ञात होता है। (यद्यपि यह आगे खोज का विषय है, इसी मंदिर के तलघर में क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी ने अपनी प्रसिद्ध रचना- 'जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष' पूर्ण की।

श्वेताम्बर मंदिर सन् 1768 ई. शाह गोवर्धन के पुत्र सर्वपद सूरियों ने बनवाया था। इस मंदिर में संगमरमर में उकेरी तीन मूर्तियाँ हैं। इसमें कोई प्रतिहार्य या लांछन नहीं दिखाया गया है। मध्य की मूर्ति की पीठिका पर विक्रम सम्वत् 1825 (1768 ई.) अंकित है एवं सुपार्श्वनाथ नाम लिखा है।